Date
13/05/2020 [B.Ed IInd year]

MISS DOLI
[Asst. Professor]

Paper – Creating an Inclusive School (1)

समावेशी शिक्षा का अर्थ
(Inclusive Education Meaning)

→ समावेशी शिक्षा एक प्रकार की ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी भी भेदभाव व अंतर के समाज के प्रत्येक वर्ग को शिक्षा प्रदान की जाती है ताकि समाज के सभी बालकों को एक स्तर पर लाया जा सके।

→ समावेशी शिक्षा जैसा कि नाम से ही पता चल रहा है जो सबको समाहित कर ले अर्थात ऐसी शिक्षा जो सबके लिए हो। अर्थात हर वर्ग के हर प्रकार के बच्चों को एक साथ एक कक्षा मे एक विद्यालय मे शिक्षा देना ही समावेशी शिक्षा है।

समावेशी शिक्षा की परिभाषाएं

कुछ प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिको की समावेशी शिक्षा की परिभाषाए जानते हैं।

→ प्रोफेसर S. K. Dubey के अनुसार

" शैक्षिक समावेशन एक ऐसी शिक्षा प्रणाली है जो छात्रों की योग्यता क्षमता एवं स्थितियों के अनुरूप दी जाती है।"

श्रीमती R.K. शर्मा के अनुसार समावेशी शिक्षा की परिभाषा —

"शैक्षिक समावेशन एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था है जिसके द्वारा प्रतिभाशाली एवं शारीरिक रूप से अक्षम छात्रों को सूचित किया जाता है।"

समावेशी शिक्षा की विशेषताएं

→ समावेशी शिक्षा या शैक्षिक समावेशन की विशेषताओं को इस प्रकार समझा सकता है।

→ समावेशी शिक्षा प्रतिभाशाली, कमजोर, औसत हर वर्ग के बालकों के लिए है।

→ समेकित शिक्षा में बालकों के मानसिक स्तर (Mental Level) को खास तौर पे ध्यान रखा जाता है।

→ इसमें जिन शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जाता है वह अन्य शिक्षण विधियों से भिन्न होती है।

→ जो छात्र सामान्य रूप से कार्य नहीं कर पाते, जैसे दिव्यांग छात्र तो उनके लिए इसमें विशेष प्रकार की व्यवस्था होती है।

→ छात्रों में आत्मविश्वास की भावना का उदय हो जाता है खुद की दिव्यांगता पर. दया जैसे भाव नही रहते। वे स्वयं को आम बालकों जैसा ही समझते है।

समावेशी शिक्षा के सिद्धान्त

समावेशी शिक्षा के सिद्धान्त इस प्रकार है-

(1) - बालकों में एक सी अधिगम की प्रवृत्ति है अर्थात सबस मे सीखने की एक जैसी आदतें है।

(2) बालकों को समान शिक्षा का अधिकार है अर्थात समावेशी शिक्षा कमजोर, प्रतिभाशाली, अमीर, गरीब, ऊंच, नीच नही देखती है।

(3) सभी राज्यों का यह दायित्व है कि वह सभी वर्गों के लिए यथोचित संसाधन सामग्री. धन तथा सभी संसाधन उठाकर स्कूलों के माध्यम से उनकी गुणवत्ता मे सुधार करके आगे बढाए

(4) शिक्षण में सभी वर्गों शिक्षक, परिवार तथा समाज का दायित्व है कि समावेशी शिक्षा मे अपेक्षित सहयोग करें।

→ व्यक्तिगत रूप से भिन्नता → इसमें व्यक्तिगत भिन्नताओं के अनुसार छात्रों को समावेशी शिक्षा प्रदान की जाती है

→ माता पिता द्वारा सहयोग प्रदान करना

→ भेदभाव रहित शिक्षा → समावेशी शिक्षा का मुख्य सिद्धान्त भेदभाव रहित शिक्षा ही है।

→ विशिष्ट कार्यक्रमों द्वारा शिक्षा — इसके माध्यम से विशिष्ट शिक्षा हेतु विशिष्ट कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

→ वातावरण नियंत्रणपूर्ण होना — इसके तहत सामान्य तथा विशिष्ट बालकों के बीच समन्वयपूर्ण वातावरण स्थापित होता है।

समावेशी शिक्षा का महत्व

इसमें अध्यापक तथा अन्य कर्मचारी में सहयोग एवं एकता से अनुकूल परिस्थितियां बनती हैं, जिनसे शैक्षिक उन्नति होती है।

इसमें विशिष्ट बालकों तथा सामान्य बालकों को पढ़ाना कम खर्चीला होता है।

(3) इस शिक्षा व्यवस्था में बालकों का मानसिक विकास एवं आत्म सम्मान की भावना का विकास अच्छी तरह से होता है।

(4) इस शिक्षण व्यवस्था में असमर्थ बालकों में प्यार दयालुता सामंजस्य सहायता भाईचारा आदि जैसे सामाजिक गुणों का भी विकास होता है।

(5) इस व्यवस्था से बालकों के बीच समानता का सिद्धान्त विकसित होता है।

(6) इसमें सामान्य तथा बाधित दोनों तरह के बालकों के बीच एक प्राकृतिक वातावरण का विकास होता है।

समावेशी शिक्षा के लाभ

(1) समावेशी शिक्षा के कारण अक्षम बालक सामान्य बालक के साथ सम्मिलित होकर लाभान्वित होते है।

(2) वैयक्तिक विभिन्नताओं के फलस्वरूप समावेशी शिक्षा अधिक लाभप्रद है।

(3) समावेशी शिक्षा अधिकतम लाभ के लिए उपयुक्त होती है, जिसमे सामान्य अक्षम तथा विशेष बच्चों को समान लाभ मिलता है।

(4) समायोजन की समस्या को दूर करने के लिए समावेशी शिक्षा लाभप्रद होती है।

(5) विशिष्ट बालकों की समस्या को समझने एवं समाधान में समावेशी शिक्षा लाभप्रद होती है।

(6) समस्यात्मक बालक बनने से रोकने के लिए भी समावेशी शिक्षा जरूरी है।

समावेशी शिक्षा की आवश्यकता

(1) समावेशी शिक्षा व्यवस्था में अपंग बालकों को सामान्य बालकों के साथ मानसिक रूप से प्रगति करने का अवसर प्राप्त होता है।

(2) इससे बालकों में सामाजिक तथा नैतिक गुण, प्रेम, सहानुभूति आपसी सद्भाव आदि गुणों का समावेश होता है।

(3) इससे बच्चों में शिक्षण तथा सामाजिक स्पर्धा की भावना विकसित होती है।

(4) समावेशी शिक्षा अपेक्षाकृत कम खर्चीली होती है क्योंकि अध्यापक विशेषज्ञ, चिकित्सक आदि का सामान्य एवं अपंग दोनों तरह के बच्चों को एक साथ सेवा देने से कम खर्च

होता है।

(5) इसमें अपंग तथा सामान्य बालक के बीच एक प्राकृतिक वातावरण बनता है जिससे बालकों में एकता की भावना आती है, एकीकरण संभव होता है।

(6) समावेशी शिक्षा समानता के सिद्धांत का अनुपालन करता है तथा इससे शैक्षिक एकीकरण भी संभव होता है।

MISS DOLI
(Asst. Professor)